International Journal of Education and Science Research
Review ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org February- 2019, Volume-6, Issue-1 Email- editor@ijesrr.org

सोशल मीडिया की उपादेयता

राजेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
शिव प्रताप राल्ही पी0जी0 कॉलेज औराई, भदोही।

संचार माध्यमों के विकास, प्रसार और बढ़ती भूमिकाओं को स्वीकार और अंगीकार करने के बावजूद सात साल पहले तक किसी ने भी कल्पना नही की थी कि सोशल मीडिया का अंतर्जाल हमारी सोच, समझ, दृष्टिकोंण, विचार, राजनीति और शिक्षा को इस कदर प्रभावित करेगा। सोशल मीडिया ने सभी उपभोक्ताओं को अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम दे दिया है। इसकी विशेषत पारस्परिकता है, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अंतर्निहित है। आईसीटी (सूचना संचार प्रौद्योगिकी) आधारित सोशल मीडिया के आविर्भाव ने अध्ययन और शिक्षा में नवाचार को उल्लेखनीय गति प्रदान की है। यहाँ सोशल मीडिया शब्द का आशय फेसबुक और ट्विटर जैसे मंचों से न होकर उस आईसीटी आधारित कम्युनिटी स है जहाँ उपयोगकर्ता जनित सामग्री (यूजर जनरेटेड कंटेंट) को एक साथ तैयार एवं साझा किया जा सकता है। यह समझना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि कुछ वर्ष पहले सोशल मीडिया की एक वेबसाइट माईस्पेस कहलाती थी, जो अब विस्मृत होती जा रही है। अतएव जहाँ यू–ट्यूब, फेसबुक और ट्विटर के भविष्य के बारे में अनुमान लगाना कठिन है वहीं यह कहना उचित ही होगा कि नयी–नयी प्रौद्योगिकियाँ और प्लेटफार्म्स शिक्षा में आई अव्यवस्था को गति ही प्रदान करेंगें।

हॉबी (शौक) को विकसित करने जैसी गैर–औपचारिक नई विधा के लिए भी मीडिया विभिन्न प्रकार के संसाधन, विविध रूपों में उपलब्ध कराता है। उत्साही लोग अपने ज्ञान, अनुभवों और सर्वोत्तम पद्धतियों को यू–ट्यूब, स्लाइडशेयर और ट्विटर पर साझा करते हैं। विशेषज्ञ लोग अपने–अपने विशिष्ट क्षेत्रों में पठन–पाठन के संसाधनों में सुधार कर उन्हें पिटरेस्ट, स्कूपर और लर्मिस्ट जैसी वेबसाइटों पर उपलब्ध कराते हैं। अध्यापकगण 'यूडेमी' और 'विजआइक्यू' पर निःशुल्क शिक्षण सामग्री साझा करते हैं। इनमें से अधिकांश दिग्गज फेसबुक अथवा गूगल ग्रुप पर चर्चा और संवाद के लिए भी प्रस्तुत रहते हैं ताकि अपने अनुयायियों की शंकाओं और समस्याओं का निराकरण कर सकें। ये ऑनलाइन लर्निंग कम्युनिटीज बनाने के लिए भी उत्सुक रहते हैं।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या आईसीटी आधारित सोशल मीडिया शिक्षा के लिए अच्छा साधन है? इसके विरोधियों में एक हैं अमरीकी लेखक निकोलस कार जो अपनी पुस्तक 'दि शैलोज : व्हाट दि इंटरनेट इज डुईंग टू आवर बेन्स' में कहते हैं कि इंटरनेट जहाँ एक ओर तथ्यों की पहचान और छानबीन की जन्मजात योग्यता को सुधारता है तो वहीं दूसरी ओर वह ध्यान केन्द्रित करने और सोचने की बौद्धिक क्षमता को क्षीण बना देता है। इंटरनेट धीरे–धीरे हमें देर तक पढ़ने और लम्बे समय तक बौद्धिक रूप से ध्यान केन्द्रित करने के अयोग्य बना देता है। कनाडा के दार्शनिक मार्शल मैकलुहान का भी यही विचार है कि मीडिया के सभी प्रचार माध्यन न केवल संप्रेषण के साधन होते हैं बल्कि वे विचार की प्रक्रिया को भी आकार देते हैं। शिक्षा में सोशल मीडिया के आलोचकों में वे शिक्षक और अभिभावक भी शामिल हैं जो यह मानते हैं कि टेलीविजन एवं वीडियों गेम्स की भांति सोशल मीडिया भी ध्यान बँटाने वाली, बुरे प्रभावों वाली, अवांछित प्रतिस्पर्धी पैदा करने वाली और समय की बर्बादी करने वाला बना देती है जो प्रायः सोशल मीडिया पर आम बात है।

एलेन लैंगर अपनी पुस्तक 'दि पॉवर ऑफ माइंडफुल लर्निंग' में साफ कहती है कि मस्तिष्क की प्राकृतिक स्थिति विभिन्नता की इच्छा रखती है। कुछ समय के लिए किसी भी बात पर ध्यान देन के लिए उद्दीपक भी विविध प्रकार के होने चाहिए। उदाहरण के लिए किसी खेल में ध्यान देते समय हमें कोई कठिनाई नहीं होती, क्योंकि खेल में नवीनता अंतर्निहित होती है – टेनिस मैच का प्रत्येक क्षण भिन्न होता है, जबकि पांच दिन के क्रिकेट टेस्ट मैंच में प्रायः हमारा ध्यान भटक जाता है क्योंकि उद्दीपक उतनी तेजी से नहीं बदलता है। जब भी हम उद्दीपक में नवीनता लाते है हम उसे और भी रोचक बना देते हैं और इसलिए उससे हमारा ध्यान नहीं हटता। यहाँ सबक यही है कि पठन–पाठन के अनुभवों की रूपरेखा तैयार करने के लिए सोशल मीडिया को इस प्रकार इस्तेमाल कर सकते हैं कि उद्दीपक शिक्षक में शुष्क भाषण से कुछ बेहतर रहे। इसके लिए उसमें ऑनलाइन चर्चाएं, बहस आदि गतिविधियाँ शामिल कर सकते हैं।

शिक्षा के संदर्भ में सोशल मीडिया के प्रभाव की गहराई मापने के लिए हमें शिक्षा के उद्देश्यो पर यह विचार करना होगा कि क्या सोशल मीडिया इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होता है या नहीं?

उद्देश्य

शिक्षा का **पहला** उद्देश्य किसी एक विषय विशेष में ज्ञान प्राप्त करना होता है ताकि उसको ठीक से समझा व उसमें पूर्ण निपुणता प्राप्त किया जा सके, सृजनात्मक क्षमता प्राप्त की जा सके और मूल्य संवर्धन किया जा सके। इस उद्देश्य में विवेचना और अभिव्यक्ति की शक्ति का विकास **दूसरा** केवल पढ़ाई आनन्द के लिए होती है, क्योंकि विद्यार्जन स्वयं में बड़ा संतोषकारी अनुभव होता है। **तीसरा** स्वयं का विकास, चरित्र निर्माण अथवा आंतरिक परिपक्वता और शरीर, मन, भावनाओं एवं आंतरिक शक्ति की स्वचेतना। इस प्रकार की शिक्षा हमें अपने पर्यावरण और लोगों के साथ सद्भावपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाती है, जो किसी व्यक्ति को दीर्घकाल तक स्वस्थ और सुखी रखती है।

शिक्षा के उद्देश्यों की समीक्षा

यदि ज्ञान के एक या अधिक क्षेत्रों में गहरी समझ और उसमें निपुणता जिससे सृजनात्मकता एवं नवाचार से मूल्य संवर्धन होता हो, तो सोशल मीडिया लाभकारी है। सोशल मीडिया की मल्टी मीडिया प्रकृति हमें विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करती है। पाठक अपने विषय की समस्या पर अपने विचार, टिप्पणी, वीडियो, एनीमेशन, कहानी, कार्टून अथवा गेम किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं। इससे अध्ययन की प्रक्रिया को सोशल मीडिया के माध्यम से एक अलग ऊँचाई प्रदान की जा सकती है। सोशल मीडिया पर ऑनलाइन सहयोग की लागत इतनी कम होती है कि शिक्षक और छात्र अध्ययन करने और रचनात्मक सृजन की संभावनाएं तलाश सकते हैं। शिक्षा मनोवैज्ञानिक हार्वड गार्डनर के अनुसार – बेहतर समझ के लिए छात्रों को अपने ज्ञान को विविध रूप में व्यक्त करने का अवसर देना ज्यादा अच्छा होता है।

शिक्षा के दूसरे उद्देश्य पर विचार करते हैं – शिक्षा केवल आनंद के लिए। उस उद्देश्य के अभिप्रेरणा का निर्धारण सिद्धान्त रूप में काम करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मानव अभिप्रेरण एक ऐसा वर्णक्रम होता है जो बाह्य नियमन से आता है। मनोवैज्ञानिक राबर्ट व्हाइट के अनुसार – मानव मात्र का प्रधान प्रेरणा स्रात वैयक्तिक योग्यता अथवा विषयगत पूर्ण निपुणता का लक्ष्य होता है। सोशल मीडिया में स्व–अभिप्रेरण के सभी तीन स्तंभ स्वायत्तता यानि विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से पहल कर सकते हैं, निपुणता ज्ञान को विभिन्न प्रकार और प्रदर्शनों से प्रस्तुत करना है। इनसे विद्यार्थी को सीखन और प्रदर्शन हेतु बाह्य प्रेरित होने के स्थान पर अंतःकरण से प्रेरित होने का अवसर मिलता है। पुस्तक 'हैगिंग आउट, मेसिंग अराउंड एंड गीकिंग आउट किड्स लिबिंग एंड लर्निंग विद दि न्यू मीडिया' में लेखकों ने पता लगाया है कि किशोर उम्र के नवयुवा किस प्रकार सोशल मीडिया से कैसे जुड़ते और क्या सीखते हैं। उनका सुझाव है कि भागीदारी के तीन स्तम्भ स्तर है – हैगिंग आउट (मित्र बनाना), मेसिंग अराउंड (बुनियादी मीडिया का ज्ञान प्राप्त करना, जैसे फेसबुक के पेज को बेहतर कैसे दिखाया जाय) और गीकिंग आउट (गेम्स जैसी और परिष्कृत डिजिटल सामग्री की रचना)।

अंत में शिक्षा के तीसरे उद्देश्य स्व–विकास, चरित्र निर्माण अथवा आंतरिक परिपक्वता और शरीर, मन, भावनाओं एवं अंतर्शक्ति के बारे में, स्व–चेतना पर विचार करें तो जब कोई किशोर ऑनलाइन कम्युनिटीज में भाग ले रहा होता है तो वह सीखता है कि कैसे कोई बात जोरदार ढग से कही जाए। भावनाओं के बारे में स्वतः होने वाला इस तरह का अहसास उनकर कितना गहरा प्रभाव डालते हैं। सोशल मीडिया आधारित गेम्स से भी सकारात्मक प्रभाव की संभावना होती है, बशर्ते वे एक व्यसन न बन जाए। लेखक जॉन सीली ब्राडम और डगलस थामस ने अपनी पुस्तक 'ए न्यू कल्चर ऑफ लर्निंग' में कहते हैं कि 'वर्ल्ड ऑफ वारक्राफ्ट' जैसे ऑनलाइन गेम से बच्चे (किशोर) फेयर प्ले (साफ–सुथरा खेल), टीम वर्क (सभी को साथ लेकर चलना), संप्रेषण और तात्कालिक काम निकालने जैसे जीवनोपयोगी कौशल सीखते हैं।

सोशल मीडिया शिक्षा के उद्देश्यों के लिहाज से हानि की अपेक्षा लाभदायक अधिक है। सोशल मीडिया में अच्छी लगन वाले शिक्षकों को लोकप्रिय शिक्षक में बदलने की भी क्षमता है। माइकल सैडेल न्याय (शास्त्र) पर एक पाठ्यक्रम चलाते हैं, कुछ समय पूर्व उनका समूचा पाठ्यक्रम www.justiceharvard.org की वेबसाइट पर ऑनलाइन कर दिया गया। अब तक लाखों छात्रों ने यह पाठ्यक्रम अपनाया है। सलमान खान की खान अकादमी एक और शिक्षा सम्बन्धी वेबसाइट है, जिससे हर महीने 60 लाख से अधिक विद्यार्थी जुड़ते हैं। सोशल मीडिया आधारित शिक्षा में अपेक्षित परिणाम देने की उच्च क्षमता है और भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में सभी के लिए शिक्षा जैसी चुनौती को अपनाकर कम खर्चीली संरचना से निपट सकती है।

शिक्षा में सोशल मीडिया के लाभ उसके दुर्गुणों से अधिक है। अतः सोशल मीडिया में शिक्षा के साधनों को शामिल किये जाने की आवश्यकता है। सोशल मीडिया में वार्तालाप, सहयोग, सामंजस्य, वैश्विक पहुँच, अपेक्षा पर खरा उतरने और कम लागत की शिक्षा की जो संभावनाएं निहित है वे भारत के सर्वशिक्षा अभियान को सफल बनाने में वरदन सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार शिक्षा में सोशल मीडिया की उपादेयता भारत जैसे देश में भी बढ़ सकती है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. योजना : मई–2013, पृष्ठ 9–14
2. योजना : जुलाई–2009, पृष्ठ 17–22
3. योजना : जनवरी–2009, पृष्ठ 42–51
4. द हिन्दू : 5 अगस्त, 2012, पृष्ठ 9–13
5. Alam, M.T. (2009), Financing and Management of Secondary Education in India, Unpublish Ph.D Thesis.
6. GOUP (2010), Human Development Report 2010, UP Department of Planning, Lucknow, Chapter-3, pp-31-42
7. Status of Education and Status of Women, Chapter-6, pp-14-26